(2)

पूर्ति कीमत — किसी पूंजीगत पदार्थ की सीमान्त उत्पादकता को प्रभावित करने वाला दूसरा तत्व पूर्ति कीमत है। पूर्ति कीमत से अभिप्राय वर्तमान पूंजीगत पदार्थों की कीमत से नहीं है। इसका अभिप्राय यह है कि वर्तमान पूंजीगत पदार्थ के स्थान पर बिल्कुल उसी प्रकार की नई मशीन की लागत क्या होगी। किसी पूंजीगत पदार्थों की पूर्ति कीमत को पुनः स्थापन लागत भी कहते हैं।

पूंजी की सीमान्त उत्पादकता को निम्न सूत्र द्वारा निर्धारित कर सकते हैं। MEC = प्रत्याशित आय Y / लागत या पूर्ति कीमत P.

प्रत्याशित दर के रूप में व्यक्त करने के लिए इसको 100 से गुणा करते हैं। अतः MEC = प्रत्याशित आय Y / पूर्ति मूल्य P × 100। एक सारणी के द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है। यह सारणी किसी विशेष परिसम्पत्ति की पूंजी की सीमान्त उत्पादकता का दर्शाता है

पूर्ति कीमत	वार्षिक आय Y	पूंजी की सीमान्त उत्पादकता MEC
20.000	2000	2000 × 100 / 20,000 = 10%
20,000	1600	1600 × 100 / 20,000 = 8%
40,000	2000	2000 × 100 / 40,000 = 5%

यह सारणी यह बताती है कि पूंजी की वार्षिक प्रत्याशित आय के घटने या उसकी पूर्ति कीमत बढ़ने से पूंजी की सीमान्त उत्पादकता में कमी आती है। इस प्रकार पूंजी का विनियोग करने से पूर्व प्रत्येक उपक्रमी एक तरफ उससे प्राप्त होने वाली आय और उसकी पूर्ति कीमत की तुलना करता है। अतः

(i) यदि प्रत्याशित आय की दर पूंजी विनियोग की लागत से अधिक होती है तो वह विनियोग करने के लिए तैयार होता है अन्यथा नहीं।

(ii) प्रत्याशित आय की दर पूंजीगत विनियोग की लागत से जितनी अधिक होती है उद्यमी को उससे उतना ही अधिक लाभ प्राप्त होने की आशा बनी रहती है फलस्वरूप उसके द्वारा उतना ही अधिक विनियोग किया जाता है।

(iii) इस प्रकार MEC पूंजी परिसम्पत्ति की भावी प्रत्याशित आय और उसकी पूर्ति कीमत के बीच का अनुपात है।

विनियोग की मांग को निर्धारित करने वाला दूसरा तत्व ब्याज की दर है। ब्याज की दर मुद्रा की मांग तथा पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है। मुद्रा की मांग से आशय तरलता पसन्दगी से होता है। लोगों में तरलता पसन्दगी के तीन मुख्य उद्देश्य होते हैं लेनदेन उद्देश्य, सतर्कता उद्देश्य, सट्टा उद्देश्य। कीन्स के अनुसार ब्याज से अभिप्राय किसी निश्चित समय के लिए तरलता के परित्याग से प्राप्त होने वाला पारितोषण है।

अल्पकाल में मुद्रा की पूर्ति स्थिर होने की हालत में ब्याज की दर पूर्णतः तरलता पसन्दगी पर निर्भर करती है। तरलता पसन्दगी जितनी अधिक होगी, ब्याज की दर भी उतनी ही अधिक होगी।

विनियोग साम्य बिन्दु

अब तक हम लोग यह जान चुके हैं कि कीन्स के अनुसार विनियोग की मात्रा दो बातों पर निर्भर करती है (i) पूंजी की सीमान्त उत्पादकता (ii) ब्याज की दर।

चूंकि पूंजी की सीमान्त उत्पादकता तथा ब्याज की दर विनियोग के दो महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व हैं इसलिए उद्यमी कोई नया विनियोग करने से पहले इनकी तुलना करते हैं। (i) जब तक पूंजी की सीमान्त उत्पादकता ब्याज की दर से अधिक होती है उद्यमी विनियोग बढ़ाते जाते हैं MEC > r
(ii) अगर ब्याज की दर पूंजी की सीमान्त उत्पादकता से कम हो तो विनियोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और उद्यमी विनियोग घटाते हैं। MEC < r
(iii) अतः विनियोग की मात्रा उस बिन्दु पर निश्चित होगी जहां ब्याज की दर पूंजी की सीमान्त उत्पादकता के बराबर होगी। अर्थात जिस बिन्दु पर ब्याज की और पूंजी की सीमान्त उत्पादकता समान होगी, वही बिन्दु विनियोग का साम्य बिन्दु होता है अर्थात MEC = r.

एक सारणी के द्वारा इसे स्पष्ट किया जा सकता है

पूंजी की कीमत	वार्षिक आय	MEC	ब्याज की दर r	विनियोग पर प्रभाव
5000	200	4%	4%	MEC = r
4000	200	5%	4%	MEC > r
5000	200	4%	5%	MEC < r

इस सारणी से स्पष्ट है कि पूंजी सम्पत्ति की नई इकाई जिसकी लागत 5000 रु० 200 रु० वार्षिक आय देती है, पूंजी की सीमान्त उत्पादकता $\frac{200}{500} \times 100 = 4\%$ । इस सारणी में जब पूंजी की सीमान्त उत्पादकता 4% ब्याज दर 4% के बराबर है तब विनियोग पर तटस्थ प्रभाव पड़ता है जब पूंजी की सीमान्त उत्पादकता उन. ब्याज की दर से अधिक है तब विनियोग पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। जब पूंजी की सीमान्त उत्पादकता ब्याज की दर से कम रहती है तो विनियोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इस स्थिति को रेखा चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं चित्र में OX अक्ष पर विनियोग तथा OY अक्ष पर पूंजी की सीमान्त उत्पादकता तथा ब्याज की दर को बताया गया है।
चित्र में rr वक्र ब्याज की दर तथा पूंजी की सीमान्त उत्पादकता MEC को बताता है मान लिया जाय कि ब्याज की दर Or

स्थिर है। इसलिए PP वक्र स्थिर ब्याज की दर को प्रकट करता है। जब विनियोग की मात्रा OI_1 है तो MEC ब्याज की दर से अधिक है इसलिए अधिक विनियोग किया जायगा। विनियोग बढ़कर OI हो जायगा ऐसी हालत में MEC वक्र तथा ब्याज वक्र PP वक्र P पर एक दूसरे को काटती है अर्थात MEC = PI। इस स्थिति के बाद विनियोग की कोई प्रेरणा नहीं होती है। यदि किसी कारणवश विनियोग OI_2 हो जाता है तो MEC TI_2 ब्याज की दर P_2I_2 से कम होगी। इसलिए विनियोगकर्त्ता को हानि उठानी पड़ेगी और विनियोग घटेगा।

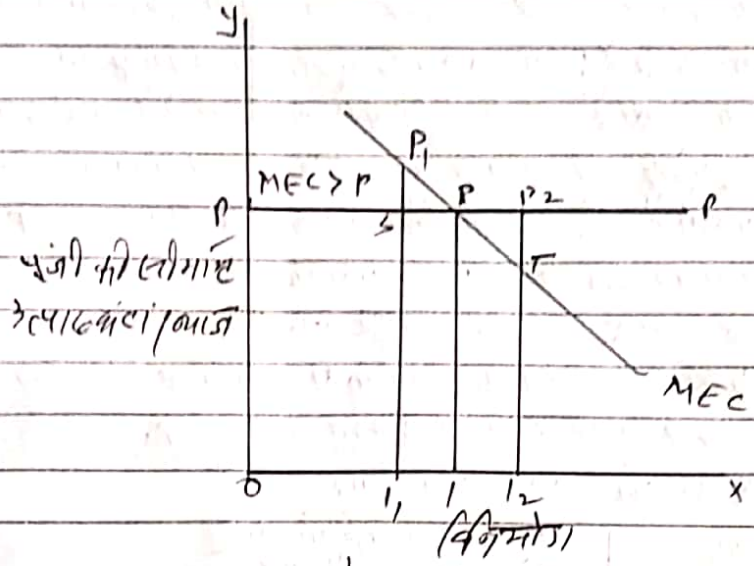

अब यहां एक प्रश्न यह उठता है कि विनियोग के निर्धारण में पूंजी की सीमान्त उत्पादकता का अधिक प्रभाव पड़ता है या ब्याज की दर का। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का यह मानना था कि विनियोग का एकमात्र निर्धारक ब्याज की दर है, किन्तु विश्व मन्दी के दौरान जब ब्याज की अत्यधिक नीची दरें भी विनियोग में वांछित वृद्धि करने में असमर्थ रही तो कीन्स ने अपना मत प्रकट किया कि "विनियोग ब्याज की दर की अपेक्षा पूंजी की सीमान्त उत्पादकता जैसी मनोवैज्ञानिक धारणा पर अधिक निर्भर करता है।" अतः विनियोग की मात्रा को प्रभावित करने वाला अधिक महत्वपूर्ण घटक पूंजी की सीमान्त उत्पादकता है।